।। जय श्री राम।।

श्री राम जन्मभूमि मंदिर सम्बन्धी जानने योग्य कुछ बातें।

01 ई. सन् 1528 में बाबर की सेनाओं द्वारा श्री राम जन्मभूमि मंदिर तोड़ दिए जाने के पश्चात अयोध्या एवं स्थानीय सन्तों, आस–पास के राजाओं रियासतों एवं गृहस्थ समाज द्वारा मंदिर की भूमि प्राप्त करने के लिए सभी राज सत्ताओं के विरोध के बाबजूद संघर्ष सदैव चलता रहा, जो ई. सन् 1949 में स्थानीय समाज द्वारा उस स्थान पर कब्जा कर लेने के बाद ही बन्द हुआ।

02 सन् 1950 से लेकर 1989 ई. तक चार वाद स्थानीय अदालत में दायर हुए, सभी वादों को वादकर्ताओं ने लड़ा, शासन ने नहीं। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ बैंच की तीन न्यायाधीशों की पीठ ने 15 वर्षो तक मुकदमा सुना, तीनों न्यायाधीशों ने अपना–अपना निर्णय स्वतंत्र लिखा, कुल निर्णय लगभग 8,500 पृष्ठों में हैं, जो न्यायालय ने तीन भागों में प्रकाशित किया है, बाजारों में उपलब्ध है, यह निर्णय राडार तरंगों द्वारा भूमि के नीचे की फोटोग्राफी, पुरातात्विक उत्खन्न, विदेशी विद्वानों द्वारा लिखे गये प्राचीन ग्रन्थों, प्राचीन भारतीय इतिहास, मध्य कालीन इतिहास एवं आधुनिक इतिहास तथा गवाहों के बयानों के आधार पर आधारित है, जिज्ञासुओं को पढ़ना चाहिए।

03 सर्वोच्च न्यायालय ने सभी पक्षों के बीच बातचीत के आधार पर समाधान का मार्ग खोजा था, तीन व्यक्तियों की मध्यस्थता टोली बनायी थी, सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री कलिफुल्ला जी, सीनियर एडवोकेट चैन्नई उच्च न्यायालय श्री श्रीराम पंचु एवं पूज्य श्री श्री रविशंकर जी इस टोली के सदस्य थे, मार्च 2019 से जुलाई 2019 तक अनेक बार बैठके हुई, परिणाम कुछ नहीं निकला, 06 अगस्त 2019 से सर्वोच्च न्यायालय की 5 न्यायाधीशों की पीठ ने नियमित सुनवाई प्रारम्भ की 40 दिन तक निरन्तर लगभग 175 घण्टे अधिवक्तों के विचार सुने गए, 09 नवम्बर

2019 को सर्व सम्मत निर्णय हिन्दू समाज के पक्ष में हुआ, इस प्रकार मंदिर निर्माण का मार्ग खुल गया।

04 सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश पर ही भारत सरकार ने ''श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र'' नाम से स्वतंत्र ट्रस्ट बनाया, कुल 15 ट्रस्टी लिखे गए। एक ट्रस्टी निर्मोही अखाड़ा की अयोध्या बैठक के लिए सुरक्षित रखा, एक ट्रस्टी अनुसूचित जाति जनजाति के लिए सुरक्षित रखा। स्थानीय जिलाधिकारी, उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार के एक–एक प्रतिनिधि जो आई.ए.एस. अधिकारी है, पदेन न्यासी बनाये गए, भारत सरकार के सुझाव पर एक पदेन न्यासी वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ट्रस्टी बनाये गए, इनको मंदिर निर्माण समिति तथा मंदिर सम्बन्धि सभी कार्यो के प्रबंधन की समिति का अध्यक्ष लिखा गया, आज इसी स्थान पर श्री नृपेन्द्र मिश्रा हैं। इनके अतिरिक्त वरिष्ठ अधिवक्ता श्री केशव पारासरन जी संस्थापक न्यासी हैं, उडूपी, पुणे, प्रयागराज, हरिद्वार से एक–एक सन्त, अयोध्या से एक सन्त तथा अन्य 3 न्यासी बनाये।

05 स्वर्गीय अशोक सिंहल जी के प्रयासों–सुझावों को श्री नृपेन्द्र मिश्रा जी को बताया गया, उन्हीं सुझावों के आधार पर लार्सन एण्ड टूब्रो को मंदिर निर्माण के लिए चुना गया तथा समकक्ष स्तर की संस्था प्रोजेक्ट सलाहकार (पी.एम.सी.) होनी चाहिए, इस कारण टाटा (टी.सी.ई.) को चुना गया।

06 मंदिर वास्तुकार अहमदाबाद निवासी श्री चन्द्रकान्त भाई सोमपुरा का चयन स्वर्गीय अशोक सिंहल जी ने वर्ष 1986 में किया था, उन्हीं को रखा गया, अन्य भवनों के निर्माण के लिए नोएडा की फर्म डिजाईन एसोसिएट (फर्म प्रमुख जय काकतीकर) को श्री नृपेन्द्र जी ने चुना।

07 श्री नृपेन्द्र जी ने अपनी सहायता के लिए मंदिर निर्माण समिति में अपनी रूचि के कुछ व्यक्तियों को जोड़ा, जिनमे से एक विगत 6 वर्षों में एक अथवा दो बार ही अयोध्या बुलाये गए, एक अन्य से सुरक्षा कार्यो से सम्बन्धित सुझाव लिए गए, एक तीसरे सदस्य श्री अनूप मित्तल

(पूर्व चेयरमेन एन.बी.सी.सी.) सदैव नृपेन्द्र जी के साथ मंदिर निर्माण समिति की बैठक में आते थे, यह बैठक प्रतिमास होती थी, कुछ काल तक 15 दिन में एक बार हुई, प्रत्येक निर्णय इसी समिति में होता था। ऐसा एक भी कार्य नहीं हुआ, जो समिति में निर्णय न हुआ हो, यदि निर्णय कर भी लिया तो वह मान्य नहीं किया गया, यदि कुछ कर भी दिया तो उसे हटा दिया गया, मंदिर निर्माण के सभी निर्णयों के लिए श्री नृपेन्द्र मिश्रा जी ने सदैव अपने को ही प्रमुख कहा।

08 यह भी सत्य है, कि श्री नृपेन्द्र मिश्रा जी के कारण पत्थरों से बना इतना विशाल मंदिर जून 2020 कोरोना काल से प्रारम्भ होकर जून 2026 तक पूर्ण रूप से समाज को समर्पित हो गया, यह केवल नृपेन्द्र जी के प्रयत्नों का परिणाम है। जब कभी कोई बाधा आई तत्काल संबंधित विषय के भारत के योग्यतम व्यक्तियों को उन्होंने निवेदन करके अयोध्या बुला लिया, और उनके परामर्श के आधार पर वह बाधा दूर हो गई। यह भी सत्य है, कि अधिकांश विद्वानों ने यहाँ सेवाभाव से सुझाव दिए अर्थात कोई पारिश्रमिक श्री राम जन्भूमि तीर्थ क्षेत्र से नहीं लिया।

09 श्री अनूप मित्तल जी जो कभी NBCC के चेयरमेन रहे, वे मंदिर निर्माण समिति के सदस्य भी हैं, सिविल इंजीनियर हैं, सदैव इंजीनियरिंग विषय पर नृपेन्द्र जी के सलाहकार रहे, नृपेन्द्र जी के सभी लिखित कार्य अनूप जी ही करते थे, उदाहरण के लिए निर्माण समिति बैठकों के विवरण तैयार करना, संबंधित व्यक्तियों को भेजना आदि, अनूप जी के साथ एक तरूण सिविल इंजीनियर यश मित्तल सदैव आये, वे तत्काल अपने लैपटोप पर हर विषय को टाईप करते थे, उसी के आधार पर सब कार्य होते थे, यह प्रशंसनीय है, कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

10 अन्तर्राष्ट्रीय रामकथा संग्राहलय उत्तर प्रदेश सरकार की सम्पत्ति है, श्री नृपेन्द्र जी ने सोचा कि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को भी एक संग्रहालय बनाना हैं, छोटे से कस्बे में दो संग्रहालय व्यवहारिक नहीं है, उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार के संबंधित अधिकारियों से वार्ता की, उन्होंने स्वीकार कर लिया,

उत्तर प्रदेश सरकार और श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र में लिखित अनुबंध हुआ, 30 वर्ष के लिए संग्रहालय भवन तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को लीज पर प्राप्त हो गया, उसे देखने पर सब ने अनुभव किया कि इसका पूर्ण जीर्णोद्धार आवश्यक हैं, श्री नृपेन्द्र मिश्र जी ने संग्रहालय के सम्पूर्ण कार्य की देखभाल के लिए राष्ट्रीय संग्रहालय से सेवा निवृत्त श्री संजीब सिंह जी का चयन किया, वे अयोध्या आ गये, सभी कार्य संभाल लिया, वास्तुकार जयकाकतीकर ने ड्राईंग बनाई, उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम को जीर्णोद्धार कार्य सौंप दिया गया, इंजीनियर इंडिया लिमिटेड (EIL) को जीर्णोद्धार कार्य की देखभाल का कार्य सौंपा गया, श्री संजीब सिंह जी ने संग्रहालय में 20 गैलरी की रूपरेखा तैयार की, श्री नृपेन्द्र जी ने कुछ कार्यो को विकसित करने और संग्रहालय में लगाने का कार्य आई.आई. टी. मद्रास को सौंप दिया, उन्होंने अयोध्या आकर देखा और कार्य प्रारम्भ कर दिया, प्रतिमास मंदिर निर्माण समिति की बैठक के साथ–साथ संग्रहालय से संबंधित कार्यो के लिए ही दो–तीन सत्रों में श्री नृपेन्द्र जी ने संबंधित सभी व्यक्तियों के साथ बैठना प्रारम्भ कर दिया, धीरे–धीरे कार्य आगे बढ़ रहा है, संभावना है कि दिसम्बर 2027 तक संग्रहालय समाज को देखने के लिए खोल दिया जाएगा।

11 श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के 70 एकड़ परिसर में दो भागों की रचना की गई, भाग एक के अन्तर्गत मंदिर निर्माण, मंदिर के चारों और परकोटा निर्माण, परकोटा में छः मंदिरों का निर्माण, मंदिर के पश्चिम दिशा में रिटेनिंग बॉल, शेषावतार मंदिर निर्माण, सप्तऋषि मंदिर अर्थात महर्षि वशिष्ट, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि वाल्मीक, महर्षि अगस्त्य, निषाद राज गुह, माता शबरी, माता अहल्या, सन्त तुलसी दास मंदिर, कुबेर टीला का विकास, कुबेर टीला पर जटायू स्थापना, यात्री सुविधा केन्द्र भवन का निर्माण, तीर्थ यात्रियों के लिए एक बड़े शौचालय परिसर का निर्माण, विशिष्ट व्यक्तियों के बैठने तथा आवश्यकता होने पर विश्राम करने के लिए ग्रीन हाउस भवन निर्माण, सीवर ट्रीटमेंट प्लांट, बिजली के पावर

हाउस, यात्रियों के जूता जमा करने के लिए दो भवन, जिस स्थान पर मंदिर परिसर में 25 मार्च 2020 से 18 जनवरी 2024 तक रामलला विराजमान थे, उस स्थान पर एक मंदिर का निर्माण, श्री राम जन्मभूमि मुक्ति के लिए विगत 1528 ई. से लेकर वर्तमान तक अपना जीवन समर्पित करने वाले हुतात्माओं की स्मृति में स्मारक निर्माण, परिसर में सड़कों का निर्माण, जमीन के नीचे पीने के पानी तथा सीवर लाईन आदि कार्य लार्सन टूर्ब्रो के द्वारा किये गए, और इस कार्य के सलाहकार टी. सी.ई. रहे।

12 70 एकड़ परिसर के भाग दो के अन्तर्गत परिसर के दक्षिणी भाग में 23 कमरों का एक अतिथि भवन, 500 व्यक्तियों के बैठने की क्षमता वाला सभागृह एवं ट्रस्ट ऑफिस तथा गाड़ियों के पार्किंग निर्माण का कार्य रखा गया, यह कार्य निर्माण का दायित्व उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम को श्री नृपेन्द मिश्र जी द्वारा दिया गया तथा इस कार्य की देखभाल सलाहकार (पी.एम.सी.) का कार्य इंजीनियर इंडिया लिमिटेड (ई.आई.एल) को सौंपा गया।

13 70 एकड़ परिसर के चारों और एक सुरक्षा दीवार निर्माण का निर्णय हुआ, यह परिधि लगभग 3.25 किलोमीटर आंकलन हुआ, सुरक्षा दीवार निर्माण में केन्द्रीय सुरक्षा बल (सी.आर.पी.एफ.) का परामर्श लिया गया, सुरक्षा दीवार की ऊँचाई सुरक्षा मानकों को ध्यान में रखकर की गयी, सी.आर.पी.एफ. की सलाह के अनुसार सुरक्षा टॉवर बनाने का निर्णय हुआ, यह कार्य ई.आई.एल. को और इसकी देखभाल का कार्य टी.सी.ई. को सौंपा गया, यह कार्य भी भाग दो के अन्तर्गत हैं।

14 अयोध्या में बिरला धर्मशाला के ठीक सामने, सुग्रीव किला के नीचे रामपथ पर श्री राम जन्मभूमि प्रवेश मार्ग से सटकर उत्तर प्रदेश सरकार से भूमि खरीदी गयी, इस भूमि पर कभी उत्तर प्रदेश परिवहन निगम का बस अड्डा था। इस स्थान पर लोहे का प्री–फैब्रिकेटेड दो मंजिला भवन

ट्रस्ट ने अपनी ओर से निर्माण कराया, इस स्थान को यात्री सेवा केन्द्र कहा जाता हैं।

15 यह ध्यान देने योग्य है कि रामपथ पर निषादराज चौराहा से लेकर वीणा चौक तक भीषण गर्मी में अथवा वर्षाकाल में यात्रियों की सुरक्षा के लिए कोई स्थान आज भी उपलब्ध नहीं है, अतः यात्री सेवा केन्द्र पर सड़क पर चल रहे किसी भी व्यक्ति के लिए सभी सुविधायें जुटाई गयी, जैसे – पुरूषों एवं महिलाओं के लिए अलग–अलग शौचालय, शुद्ध पेय जल की उपलब्धता, मोबाईल/जूता/अपने बैग आदि रखने के लिए लॉकर व्यवस्था, मातायें अपने शिशुओं को स्तनपान करा सकने की व्यवस्था, व्हील चेयर उपलब्धता बैठने के लिए लगभग 300 से अधिक कुर्सियाँ, आरती पास आदि की व्यवस्था, यदि कुछ सम्पर्ण करना चाहता है तो उसे स्वीकार करने की व्यवस्था ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध कराई गयी, सत्य सांईं सेवा ट्रस्ट बैंगलोर की ओर से एलोपैथिक चिकित्सा सेवा, ट्रस्ट की ओर से होम्योपैथिक चिकित्सा सेवा, फिजियोथ्रैपी सेवा केन्द्र, उत्तर रेलवे द्वारा रेलवे टिकिट बनवाने की व्यवस्था इस स्थान पर सदैव उपलब्ध रहती है, सभी सेवायें निःशुल्क हैं, किसी भी सेवा कार्य का कभी कोई पैसा ट्रस्ट ने नहीं लिया।

16 रामलला की प्राण–प्रतिष्ठा 22 जनवरी 2024 को माननीय प्रधानमंत्री जी भारत सरकार एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक डॉ. मोहन राव भागवत के कर कमलों द्वारा किये जाने के पश्चात हमारा अनुमान है, कि प्रतिदिन 75,000 से अधिक दर्शनार्थी भगवान का दर्शन करते हैं, कभी कोई दुर्घटना नहीं हुई, जनवरी, फरवरी 2025 में प्रयागराज में कुम्भ मेला अवधि में अनुमान है, कि प्रतिदिन तीन लाख से अधिक श्रद्धालु अयोध्या आये, सबने दर्शन किए इस काल में भी कोई दुर्घटना नहीं हुई, की भी दर्शनार्थी को अधिक से अधिक 90 मिनिट लगता है, इस काल में प्रवेश करना, पुलिस द्वारा चैंकिग, यात्री सुविधा केन्द्र पर अपने मोबाईल,

जूता, सामान आदि जमा करना, दर्शन करना, दर्शन करने के पश्चात बाहर निकलना, अपना सामान वापस लेना आदि सब कुछ सम्मिलित है।

17 किसी भी प्रकार की दुर्घटना न होना इसमें पुलिस की सुव्यवस्था समान रूप से प्रशंसनीय हैं।

18 यात्रियों को प्रवेश द्वार से ही लाईनों में लगा दिया जाता है, अच्छी Q पद्धति बनायी गई है, कोई दर्शनार्थी आपस में टकराता नहीं, बीच – बीच में बैठने के लिए सुविधा दी गई है, पेयजल भी उपलब्ध रहता है, यदि किसी को लघुशंका जाने की आवश्यकता होती है, तो उसके लिए बीच–बीच में निकास मार्ग बनाये गये हैं।

19 रामलला के दर्शन हेतु 8 पंक्तियाँ बनाई है, एक विशिष्ठ दर्शन, एक सुगम/व्हील चेयर दर्शन, 6 सामान्य पंक्ति, सभी पंक्तियों का आवागमन मार्ग अलग है, कहीं क्रिस क्रास नहीं है, इसी कारण एक दिन में दो लाख लोगों का दर्शन सुगम रीति से हो सकता है।

20 अति विशिष्ठ अतिथि जैसे राज्यपाल, मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री, न्यायाधीश आदि के आने पर उनके दर्शन सामने से होते है, और सामान्य श्रद्धालुओं का दर्शन भी चलता रहता है। सुरक्षा के कारण कुछ समय सुगम/व्हील चेयर तथा विशिष्ठ जनों का दर्शन रोकते है, सामने की एक सामान्य पंक्ति में सुरक्षा कर्मी परन्तु सामान्य अन्य पाँच पक्तियों में दर्शन चलते रहते है।

21 प्रातः 6.30 बजे से रात्रि 9.45 तक दर्शन होते है, दोपहर 12.30 से 01.00 बजे तक केवल 20 मिनिट के लिए ठाकुर जी के विश्राम हेतु कपाट बंद रहते है, अधिक भीड़ होने पर पट बंद नहीं करते और दर्शन कराते रहते है।

22 आने वाले श्रद्धालुओं को रामानंदाचार्य प्रवेश द्वार (रामपथ) से प्रवेश करके यात्री सुविधा केन्द्र पर अपना सामान और जूता–चप्पल जमा करके रामलला तथा राम परिवार दर्शन पूर्ण कर फिर यात्रि सेवा केन्द्र से अपना सामान वापस प्राप्त कर बाहर जाने में केवल एक घंटा लगता है, अत्यधिक

भीड़ के समय में भी अधिकतम 2 घंटे लगते हैं। अगर किसी को पूर्ण परिसर का दर्शन करना हो (लोवर प्लिंथ के रामायण प्रसंग, परिक्रमा मार्ग के सभी मंदिर, शेषावतार मंदिर, सप्त मंदिर, कुबेर टीला, बलिदानी स्मारक) तो उसके लिए और एक–दो घंटे का अतिरिक्त समय लगेगा।

23 आयु तथा शारीरिक अस्वस्थता के कारण चलने में असमर्थ श्रद्धालु न्यास का निःशुल्क व्हील चेयर उपयोग करके बिना कष्ट के ठाकुर जी का दर्शन कर सकते हैं।

24 न्यास के काउंटर (तीर्थ यात्री सेवा केन्द्र/राम कचहरी ऑफिस) पर संबंधित कागज दिखाकर (किसी के प्रभाव, परिचय के बिना) 60 साल से ऊपर के ज्येष्ठ नागरिक, दिव्यांग जन, शारीरिक अस्वस्थ जन, गर्भवती माता, 5 साल से छोटे बच्चों की माँ अपने साथ एक व्यक्ति सहित निःशुल्क सुगम दर्शन पास प्राप्त कर सकते हैं।

25 न्यास की सभी सेवाए दर्शन पास, आरती पास, प्रसाद आदि निःशुल्क है।

26 परिसर में भजन, कीर्तन, सुन्दर काण्ड, संगीत सेवा, नृत्य सेवा आदि करने के लिए इच्छुक समूह को उनके कार्यक्रम के लिए योग्य व्यवस्था निःशुल्क किया जाता है, उनका परिसर में प्रवेश, कार्यक्रम उपरांत सुगमता पूर्वक मंदिर दर्शन की व्यवस्था भी किया जाता है।

27 मंदिर के अर्चक शुद्ध रूप से ठाकुर जी के राग–भोग, वेद/रामायण/विष्णु सहस्त्रनाम परायण आदि सेवा में लगे रहते हैं, श्रद्धालु को दर्शन कराना, यात्रियों को मंदिर में पूजा कराकर उनसे दक्षिणा लेना आदि कार्य नहीं होता।

28 श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र का बैंक अकाउंट बिना चेक बुक अकाउंट है, सभी भुगतान बैंक ट्रान्सफर के द्वारा ही होता है, नगद का उपयोग नहीं होता है, अतः आर्थिक व्यवहार में पारदर्शिता है।

29 सभी लेन–देन में संपूर्ण सरकारी नियमों का पालन होता हैं न्यास से जुडे सभी व्यक्तियों के साथ कार्यकर्ता जैसा व्यवहार होता हैं।

30 सरकार के सभी विभागों के टैक्स (GST. TDS, Registry stamp-fees, labour cess, PF, ESI आदि) सरकार को जमा किये जाते है, सरकार के किसी टैक्स में कभी चोरी नहीं की गयी।

31 शायद ही देश के किसी मंदिर में इतनी अधिक संख्या में, इतनी सुविधा से और इतने कम समय में सुव्यवस्थित दर्शन होते हों।

32 श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र (ट्रस्ट) के खातें तीन बैंकों में हैं– स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नैशनल बैंक एवं बैंक ऑफ बड़ौदा। ट्रस्ट ने बैंक से कोई चैक बुक नहीं ली है, अर्थात सभी प्रकार का भुगतान ऑनलाईन (आर.टी.जी.एस.) पद्धति से ही होता हैं, अन्य कोई पद्धति नहीं हैं। आंतरिक अंकेक्षण दिल्ली की ही एक ऑडिट फर्म द्वारा, तद्पश्चात वैधानिक अंकेक्षण भी दिल्ली की ही दूसरी ख्यातिनाम फर्म वी.शंकर अय्यर द्वारा किया जाता है।

33 मंदिर में प्रत्येक दशर्नार्थियों को प्रत्येक निकास मार्ग पर भगवान का प्रसाद पैकेट निःशुल्क उपलब्ध कराया जाता है।

(चम्पतराय)

18 अगस्त, 2026